नवरात्र तत्त्व

आद्याशक्ति भगवती स्वयं कहती है

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥

'शरद् ऋतुमें मेरी जो वार्षिक महापूजा अर्थात् नवरात्र पूजन होता है , उसमें श्रद्धा-भक्ति के साथ मेरे इस ' देवी-माहात्म्य ' (रातशती) का पाठ या श्रवण करना चाहिये। ऐसा करनेपर निःसंदेह मेरे कृपा-

प्रसादसे मानव सभी प्रकारकी बाधाओंसे मुक्त होता है और धन-धान्य, पशु-पुत्रादि सम्पत्तिसे सम्पन्न हो जाता है।'

शक्ति-दर्शनानुसार परब्रह्मसे अभिन्न आदिशक्ति पराम्बाकी उपासना इसीलिये की जाती है कि वह साधकको भुक्ति और मुक्ति दोनोंका अवदान दे और उपर्युक्त श्लोकोंमें भगवती श्रीमुखसे उसे भुक्ति या सर्वविध भोग प्रदान करनेका वचन दे रही है। परब्रह्माभिन्न परब्रह्ममहिषी होनेसे मुक्ति तो माता हमें घलुवेमें ही दे देगी। उपर्युक्त इलोकमें शरत्कालमें शारदीय नवरात्र एवं वर्षारम्भ चैत्रमें वार्षिक नवरात्र- इन दोनोमें देवी-माहात्म्यके पाठके विषय में जो दो बातें कही गयी हैं, वे विचारणीय है। देवी-माहात्म्य' को सप्तशती के रूपमें सभी जानते हैं और यह ही जानते है कि सुमेवा ऋपिने राजा सुरथ और समाधि वैश्यको ७०० श्लोको, मन्त्रों के उस ग्रन्थमें महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वतीके तीन चरित्र बताये हैं ।

शेष रह जाता है नवरात्र और इस सप्तशती-पाठका प्राणभूत पाठ के पूर्व अनिवार्यतः किया जानेवाला नवार्ण-मन्त्रका जप। यहाँ इन्ही दो विषयोंपर संक्षेपमें प्रकाश डालनेका उपक्रम है।

इनमें प्रथम 'नवरात्र' पर ही विचार करे। **'नवरात्र'** में दो शब्द है। **नव-रात्र** | नव शब्द संख्याका वाचक है और 'रात्र' का अर्थ है रात्रि-समूह, कालविशेष। इस 'नवरात्र' शब्दमे संख्या और कालका अद्भुत सम्मिश्रण है। यह 'नवरात्र' शब्द- **नवानां रात्रीणां समाहारः नवरात्रम्। रात्राह्नाहाः पुंसि (पाणि ० २।४।२९)** तथा संख्या पूर्व रात्रम्। (क्लीबम् लिं० सू० १३१ से) बना है। यो ही द्विरात्रं निरात्रं पाञ्चरात्रं गणरात्रम् आदि द्विगु समासान्त शब्द है। इस प्रकार इस शब्दसे जगत् के सर्जन-पालनरूप अग्नीषोमात्मक द्वन्द्व (मिथुन) होनेकी पुष्टि होती है।

नवरात्रमें अखण्ड दीप जलाकर हम अपनी इस 'नव' सख्यापर रात्रिका जो अन्धकार, आवरण छा गया है,

अप्रत्यक्षतः उसे सर्वथा हटाकर विजया' के रूपमें आत्म-विजयका उत्सव मनाते है। ध्यान रहे कि यह 'नव' संख्या अखण्ड, अविकारी एकरस ब्रह्म ही है। आप ' नौ' का पहाड़ा पढ़िये और देखिये कि पूरे पहाड़ेमें नौ ही नौ अखण्ड ब्रह्मकी तरह चमकते रहेंगे

९, १८ (१+ ८ ९), २७ (२ + ७ = ९), ३६ (३ + ६ = ९), ४५ (४ + ५ = ९) ६३ (६ + ३ = ९), ७२ (७ + २ = ९) और ८१ (८ + १ = ९)। अन्तमें यही ९ ' खं ब्रह्म बन जाता है-९ ०।

इसी प्रकार वर्षके सामान्यतः ३६० दिनोको ९ की संख्यामें बाँट दे , भाग दें तो ४० नवरात्र हाथ लगेगे।

तान्त्रिकोंकी दृष्टिमें ४० संख्याका भी बड़ा महत्त्व है। **४० दिनोका एक' मण्डल** ' कहलाता है और कोई जप आदि करना हो तो ४० दिनोंतक बताया जाता है। **नवरात्र क्रम शक्ति दृष्टि तथा मण्डल क्रम शिव दृष्टि है।**

कदाचित् हमारे ये नवरात्र वर्षभरके ४० नवरात्रोंकी एकांश उपासनार्थ कहे जा सकते है। वैसे देवीभागवतमें ४ नवरात्र ४० के दशमांशमे निर्दिष्ट है ही दो तो अतिप्रसिद्ध ही है। जो कुछ हो, आप इन ४० नवरात्रोंमेंसे ० को अलग कर दे और केवल ४ को लें तो वर्षाके ४ प्रधान नवरात्र वन जायेंगे जो १-चैत्र, २-आषाढ, ३-आश्विन, और ४ माघमासके शुक्लपक्षकी प्रतिपद्से नवमीतक, जो हमारे चार पुरुषार्थो' (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) के प्रतीक बन सकते हैं। इनमेंसे ४ को दोमें विलीन कर दें --- विनियोगद्वारा अर्थको धर्ममें और कामको जिज्ञासारूप बनाकर मोक्षमें अन्तर्भूत कर दें तो पुरुषार्थोके प्रतीक रूपमें दो ही सर्वमान्य नवरात्र हमें हाथ लगते है। १-वार्षिक या वासन्तिक नवरात्र (चैत्र शुक्ल प्रतिपद्से नवमीतक) और २-शारदीय नवरात्र (आश्विन शुक्ल प्रतिपदसे नवमीतक)।।

इन दोनों नवरात्रोंकी सर्वमान्यता और मुख्यता भी

सकारण है। मानव-जीवनकी प्राणप्रद ऋतुएँ मूलत. ६ होनेपर भी मुख्यतः दो ही है -- १. शीत ऋतु (सर्दी) और २. ग्रीष्म ऋतु (गर्मी)। आश्विनसे-शरद् ऋतुसे शीत तो चैत्रसे --- बसन्तसे ग्रीष्म। यह भी विश्वके लिये एक वरद मिथुन (जोड़ा) बन जाता है। एकसे गेहूँ (अग्नि) तो दूसरेसे चावल (सोम) -इस प्रकार प्रकृतिमाता हमें इन दोनो नवरात्रोमे जीवन-पोषक अग्निषोम (अग्नि-सोम) के युगलका सादर उपहार देती है। यही कारण है कि ये दो नवरात्र -१. नवगौरी या परब्रह्म श्रीरामका नवरात्र और २. नवदुर्गा या सबकी आद्या महालक्ष्मीके नवरात्र सर्वमान्य हो गये।

फिर भी शक्ति और शक्तिमान्में अभेददृष्टिके उपासक इसी शारदीय नवरात्रपर निर्भर करते है और इसीलिये भगवतीने भी लेखारम्भके श्लोकोंमें इसी एक नवरात्रकी उपासनाकी फलश्रुति अपने वचनमे बतायी

है।

यहाँ एक शङ्का और हो सकती है कि शक्तिकी विशेष उपासनाके लिये नौ दिन ही क्यो नियत किये गये, इससे अधिक या कम क्यों नहीं? एक तो यह कि दुर्गामाता नवविधा है, अतएव नौ दिन रखे गये। दूसरा, अभी नवरात्रको वर्षके दिनोंका ४० वाँ भाग बताया गया, वह भी हमें दुर्गापूजाके नौ ही दिन रखनेका समर्थन करता है।

तीसरा, शक्तिके गुण तीन हैं --- सत्त्व, रजस, तम। इनको त्रिवृत (तिगुना) करनेपर नौ ही हो जाने हैं। जैसे यज्ञोपवीतमें तीन बड़े धागे होते हैं और उन तीनोंमें प्रत्येक धागा तीन-तीनसे बना है, वैसे ही प्रकृति, योगमायाका त्रिवृत् गुणात्मक रूप नवविध ही होता है। महाशक्ति दुर्गाकी उपासनामें उसके समग्र रूपकी आराधना हो सके, इस अभिप्रायसे भी

नवरात्रके नौ दिन रखे गये।

ॐ शम्

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661